सोमवार व्रत कथा — सीमंतिनी का चयनित पूर्ण प्रसंग

Somvar Vrat Katha — Complete Selected Simantini Account

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj controlling Somvar account, physical scans 712–718. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 Shri Venkateshwar complete comparison, physical scans 887–894; 1897 metadata — edition identity and CC0 provenance.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj Sanskrit print, Somavratakatha 1–95, physical scans 712–718, not a transcription of the original text.

शिव-भक्ति और सीमंतिनी के जन्म की भूमिका

KATHA 1–26

ईश्वर शिव-भक्ति, अच्छे आचरण और आसक्ति से ऊपर उठने का महत्व कहते हैं। वे गृहस्थ जीवन के सुख और मुक्ति का धार्मिक फल बताते हैं। सोमवार और प्रदोष की पूजा का उल्लेख आता है। श्रावण, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और मार्गशीर्ष जैसे महीनों में आरंभ, पूजा, संयम और उपवास की बातें स्रोत की भूमिका में हैं। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, कन्या, विवाहित स्त्री और विधवा के लिए भी आराधना का उल्लेख है। यह पुनर्कथन कोई अनिवार्य उपवास, स्वास्थ्य का वादा या सभी के लिए एक ही आरंभ-दिन नहीं तय करता।

अब सूत के द्वारा सुनाए गए उदाहरण की ओर कथा बढ़ती है। भारत में चित्रवर्मा नाम के राजा शिव और मुकुंद के भक्त तथा धर्मपरायण कहे जाते हैं। संतान की इच्छा के बाद उनके घर कन्या जन्म लेती है। वे उसे बड़े स्नेह से पालते हैं, जैसे हिमवान अपनी पुत्री पार्वती को। कन्या का नाम सीमंतिनी रखा जाता है। उसके गुण और सौभाग्य का वर्णन उमा, दमयंती, सरस्वती, लक्ष्मी और जानकी की उपमाओं से होता है।

जन्म के समय बुलाए गए विद्वान पहले शुभ भविष्य बताते हैं। एक कथन में बहुत लंबा सुखी दाम्पत्य आता है; स्रोत दस हजार वर्षों की असाधारण अवधि कहता है। पर एक अन्य ज्योतिषी कहता है कि चौदह वर्ष की उम्र में कन्या विधवा होगी। राजा यह सुनकर दुखी हो जाते हैं। दोनों बातें कथा की भविष्यवाणी हैं, किसी वास्तविक बालिका के भविष्य का प्रमाण, विवाह का निर्णय या ज्योतिष संबंधी सलाह नहीं।

Ishvara praises devotion to Shiva, good conduct and detachment, speaking of household happiness and liberation as religious benefits. Monday and Pradosha worship are mentioned, with several possible starting months including Shravana, Chaitra, Vaishakha, Jyeshtha and Margashirsha. Worship, restraint and fasting appear in this introduction. It includes celibate students, householders, girls, married women and widows among worshippers. This retelling establishes no mandatory fast, health promise or universal starting day.

The account turns to an example related through Suta. King Chitravarma of Bharata is described as righteous and devoted to Shiva and Mukunda. After longing for a child, a daughter is born. He cherishes her as Himavan cherishes Parvati. Named Simantini, her qualities and good fortune are compared with Uma, Damayanti, Sarasvati, Lakshmi and Janaki.

Learned people called at her birth initially predict an auspicious future. One predicts extraordinarily long marital happiness, described as ten thousand years. Another predicts widowhood at fourteen, grieving the king. These conflicting predictions belong to the story; they do not establish a real girl's future, determine a marriage or provide astrological advice.

मैत्रेयी का उपदेश, विवाह और नदी का संकट

KATHA 27–54

चित्रवर्मा दुख के बीच भी अपनी बेटी को प्रेम से पालते हैं। बड़ी होने पर सीमंतिनी एक सखी से भविष्यवाणी सुनती हैं। वे याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी के पास जाकर अपने दाम्पत्य के लिए सहायता पूछती हैं। मैत्रेयी शिव और पार्वती की सोमवार को आराधना, संयम, पूजा और उपवास का वर्णन करती हैं। स्रोत एक वर्ष के पालन और उसके समापन की बात कहता है। फूल, धूप, दीप, भोजन-अर्पण, प्रणाम, जप, ब्राह्मणों को भोजन और दान के धार्मिक फल बताए जाते हैं। संकट आने पर भी शिव के स्मरण को न छोड़ने का आश्वासन है। यह कथा का उपदेश है, भूखे रहने, वस्तुएँ खरीदने या कठिन विधि करने का पाठक को आदेश नहीं।

सीमंतिनी बताए हुए ढंग से आराधना करती हैं। नल और दमयंती के पुत्र इंद्रसेन के बेटे चंद्रांगद से उनका विवाह होता है। चित्रवर्मा राजकुमार को बुलाते हैं; अनेक राजाओं की उपस्थिति में उत्सव और विवाह संपन्न होता है। चंद्रांगद कुछ समय ससुराल में रहते हैं। एक दिन यमुना में नौका-विहार करते समय नाव डूब जाती है। परिवार में शोक फैलता है; इंद्रसेन को भी पुत्र की दुर्घटना की खबर दुख देती है।

सीमंतिनी को पति की मृत्यु का भय इतना व्याकुल करता है कि वे स्वयं जीवन छोड़ना चाहती हैं। पिता उन्हें रोकते हैं। आत्महानि का तरीका यहाँ नहीं दोहराया जाता और इसे निष्ठा का आदर्श नहीं माना जाता। वे गहरे दुख में भी शिव का स्मरण करती रहती हैं। स्रोत तीन वर्षों का अलगाव बताता है। यह धैर्य और शोक का कथा-प्रसंग है, विधवा का अपमान, परिवार का दोष या पति की वापसी के लिए व्रत की गारंटी नहीं।

Chitravarma continues to cherish his daughter despite his grief. Growing up, Simantini hears the prediction from a friend and asks Maitreyi, wife of Yajnavalkya, for help concerning her marriage. Maitreyi describes Monday worship of Shiva and Parvati, restraint, worship and fasting, with a year of observance and its conclusion. Flowers, incense, lamps, food offerings, bowing, japa, feeding Brahmins and gifts are associated with religious benefits. She assures Simantini not to abandon remembrance of Shiva even in distress. This is teaching within the narrative, not an instruction to readers to go hungry, buy objects or undertake demanding rites.

Simantini observes the practice described. She marries Chandrangada, son of Indrasena, whose parents are Nala and Damayanti. Chitravarma invites the prince; many kings attend the wedding celebration. Chandrangada stays with his in-laws. While boating on the Yamuna, his boat sinks. The family grieves, and Indrasena too is distressed by news of his son's accident.

Fearing her husband's death, Simantini becomes so distressed that she wishes to abandon life. Her father stops her. No method of self-harm is reproduced or held up as exemplary fidelity. She continues remembering Shiva amid grief. The source describes three years of separation. This narrative of endurance does not endorse widow stigma, blame a family or guarantee a husband's return through a vow.

नागलोक में सहायता और यमुना किनारे भेंट

KATHA 55–79

चंद्रांगद की मृत्यु नहीं हुई है। जल में डूबने के बाद नागकन्याएँ उन्हें पाताल के दिव्य नगर में पहुँचाती हैं। रत्नों, भवनों और नागों से सजे उस नगर में तक्षक का राजमहल है। राजकुमार उनके सामने प्रणाम करते हैं। तक्षक पूछते हैं कि वे कौन हैं और यहाँ कैसे आए। चंद्रांगद नल, दमयंती और इंद्रसेन का वंश बताते हैं। वे चित्रवर्मा की बेटी से अपने विवाह, यमुना की दुर्घटना और नागकन्याओं की सहायता का वर्णन करते हैं।

तक्षक उनके आराध्य देवता के बारे में पूछते हैं। राजकुमार महादेव को अपने परम आराध्य कहते हैं और उनके व्यापक स्वरूप की स्तुति करते हैं। स्रोत ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के संदर्भ में शिव की सर्वोच्चता कहता है; यह पात्र का धार्मिक कथन है, अन्य परंपराओं का मूल्यांकन नहीं। तक्षक प्रसन्न होकर उन्हें दिव्य सुख और नागलोक में रहने का अवसर देते हैं। लेकिन चंद्रांगद अपने माता-पिता और पत्नी के पास लौटना चाहते हैं। उन्हें चिंता है कि परिवार उनकी अनुपस्थिति में दुखी होगा।

तक्षक उन्हें घोड़ा और रत्न देते हैं तथा एक नागपुत्र और राक्षस को सहायक बनाकर साथ भेजते हैं। राजकुमार यमुना से फिर ऊपर आते हैं। उसी समय सीमंतिनी सखियों के साथ नदी पर हैं। वे राजकुमार, घोड़े और उनके साथियों को देखती हैं, पर तुरंत पहचान नहीं पातीं। चंद्रांगद पूछते हैं कि यह युवती किसकी बेटी और पत्नी है। सीमंतिनी उनकी दिव्य शोभा देखकर चकित होती हैं। स्रोत उनके वैधव्य से जुड़ी लज्जा कहता है; यहाँ विधवा के सम्मान को कम नहीं माना जाता। सखियाँ उनका परिचय देती हैं और बताती हैं कि उनके पति तीन वर्ष पहले नदी में डूब गए थे।

Chandrangada has not died. After sinking, Naga maidens bring him to a divine netherworld city of jewels, buildings and Nagas, where Takshaka has his palace. The prince bows. Asked who he is and how he arrived, he identifies his descent from Nala, Damayanti and Indrasena, his marriage to Chitravarma's daughter, the Yamuna accident and the maidens' help.

Takshaka asks whom he worships. Chandrangada praises Mahadeva as his supreme deity. The source describes Shiva's supremacy in relation to Brahma, Vishnu and Rudra; this is the character's religious statement, not an assessment of other traditions. Delighted, Takshaka offers celestial pleasures and residence in the Naga realm. Chandrangada instead wishes to return to his parents and wife, worried about their grief during his absence.

Takshaka gives him a horse and jewels and sends a Naga prince and a Rakshasa as companions. Chandrangada emerges from the Yamuna. Simantini is at the river with friends. Seeing him, his horse and companions, she does not immediately recognize him. He asks whose daughter and wife she is. Astonished by his splendour, she feels the shame that the source associates with widowhood; this retelling does not diminish a widow's dignity. Her friends identify her and explain that her husband drowned three years earlier.

घर-वापसी, पुनर्मिलन और कथा का समापन

KATHA 80–95

चंद्रांगद सीमंतिनी के दुख और शिव-आराधना की बात सुनते हैं। वे उनके बदले हुए रूप को देखते हैं और

तुरंत अपना परिचय नहीं खोलते। कथा उस भेंट की अनिश्चितता को स्वप्न जैसी स्थिति से जोड़ती है। वे आश्वासन देते हैं कि उनके पति, जो उनके मित्र हैं, कुछ दिनों में लौटेंगे। सीमंतिनी और उनकी सखियों से बात करके राजकुमार अपने नगर की ओर जाते हैं।

इस बीच संबंधियों ने इंद्रसेन को राज्य से हटा दिया था। चंद्रांगद अपने नागपुत्र साथी को संदेश लेकर भेजते हैं। उसके प्रभाव से विरोधी इंद्रसेन को छोड़ते हैं और राज्य वापस मिलता है। कथा का यह राजकीय संकट अलौकिक सहायता से सुलझता है; इसे धमकी या बल प्रयोग का पाठक को निर्देश नहीं बनाया गया है। राजकुमार का आदर के साथ स्वागत होता है। वे पिता को दुर्घटना और नागलोक से लौटने की पूरी बात कहते हैं। इंद्रसेन शिव की आराधना करते हैं और अपना स्थान फिर पाते हैं। चंद्रांगद और सीमंतिनी का पुनर्मिलन होता है।

अंत में स्रोत दस हजार वर्षों के दाम्पत्य और राज्य का वर्णन करता है। दस पुत्र और एक पुत्री होने का कथन आता है। सीमंतिनी महेश्वर की आराधना करती रहती हैं और कथा शिवलोक की प्राप्ति कहती है। ये पौराणिक अवधि और धार्मिक फल हैं, जीवनकाल, संतान या परिवार के सुख की वास्तविक गारंटी नहीं।

अंतिम वचन श्रद्धा से इस कथा को पढ़ने और सुनने वाले के सौभाग्य की प्रशंसा करता है। इसी के बाद सोमवार-व्रत कथा का अपना समापन है। अगला अलग उद्यापन-विधान इस पाठ में शामिल नहीं। आरंभ का भय, नदी की दुर्घटना, सहायता, वापसी और अंतिम प्रशंसा सहित चयनित पूरा प्रसंग यहाँ समाप्त होता है। यह पुनर्कथन किसी परिवार की हानि को कम भक्ति का परिणाम नहीं कहता और न किसी स्त्री पर अपने पति को बचाने की जिम्मेदारी डालता है।

Chandrangada hears of Simantini's grief and Shiva worship. Seeing her changed appearance, he does not immediately disclose his identity. The encounter's uncertainty is associated with a dreamlike experience. He assures her that her husband, described as his friend, will return within a few days. After speaking with her and her friends he goes to his capital.

Meanwhile relatives have displaced Indrasena from his kingdom. Chandrangada sends his Naga-prince companion with a message. Its effect secures Indrasena's release and restoration. This supernatural resolution is not an instruction to readers to threaten or use force. Chandrangada is welcomed with honour and tells his father the full account of the accident and return from the Naga realm. Indrasena worships Shiva and regains his position. Chandrangada and Simantini are reunited.

The ending describes ten thousand years of marriage and rule, ten sons and one daughter. Simantini continues worshipping Maheshvara, and the account speaks of reaching Shiva's abode. These mythic durations and religious benefits are not actual guarantees of lifespan, children or family happiness.

The final verse praises the good fortune of those who read or hear the story devotionally, followed by the Somvar katha's own colophon. The separately headed udyapana manual is excluded. The selected whole account ends here, including the initial fear, accident, help, return and concluding praise. This retelling neither attributes a family's loss to insufficient devotion nor makes a woman responsible for saving her husband.